सोशल मीडिया का युवाओं के शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन

प्रिया रावत
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ

डॉ. चन्दना डे
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ

शोध सार

हमारे समाज में किसी भी तकनीकी का आविष्कार समाज के उपयोग के लिए ही किया जाता है लेकिन इसका दुरुपयोग ना हो यह सुनिश्चित करना हमारा ही उत्तरदायित्व है। सोशल मीडिया उन में से एक है। सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते है वैसे ही सोशल मीडिया का भी हमारे जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव है। सोशल मीडिया के प्रयोग ने मनुष्य के नए संबंध बनाने और भौगोलिक सीमा के बाहर भी संबंध बनाए रखने में प्रौद्योगिकी उपकरण के रूप में उभर कर सामने आया है जो आभासी दुनिया का निर्माण करता है जहाँ इंटरनेट के द्वारा पहुँच सकते है। मीडिया के इस स्वरूप को सोशल मीडिया कहने का कारण है कि यह सर्व सुलभ एवं सम उपयोगी है, क्योंकि यहाँ मानव स्वतंत्रता पूर्वक बेरोक-टोक अपनी बात रख सकता है। सोशल मीडिया एक शैक्षिक उपकरण के रूप में भी प्रयोग हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में डेटा संकलन के लिए द्वितीयक स्त्रोत प्रकार के डेटा उपकरण का उपयोग किया गया है जिसमें डेटा संकलन के लिए शोधार्थी ने शोधगंगा, गूगल स्कॉलर,रिसर्चगेट, एरिक जैसे वेबसाइट व जनरल पेपर्स का उपयोग किया गया है। इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि, सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है और अगर सोशल मीडिया के बारे में विद्यार्थियों को उसकी उपयोगिता से परिचित कराकर प्रयोग किया जाए तो वह युवाओं के शैक्षिक उपलब्धि उन्नयन में महत्वपूर्ण कारक बन सकता है।

मुख्य शब्द: *सोशल मीडिया,शैक्षिक उपलब्धि,युवा*

१. प्रस्तावना

पहले अखबार ही जनसंपर्क का माध्यम था जिसमें मल्टी मीडिया का प्रयोग हुआ था उसके बाद 1885 में मारकोनी ने रेडियो संदेश भेजा था फिर उसके बाद बींसवीं शताब्दी 1901 में टेलीग्राफ का प्रयोग रेडियो द्वारा शुरू हुआ। आज भी रेडियो तरंग ऑडियो प्रसारण मे प्रयोग हो रहा। सामान्य तौर पर सोशल मीडिया एक प्रकार का संचार माध्यम है जिसमें सूचना मिलती है। प्रिंट मीडिया, प्रकाशन ,फोटोग्राफी, टीवी, रेडियो, सिनेमा आदि के संचार की विभिन्न उपकरण है। सोशल मीडिया कंप्यूटर आधारित एक तकनीक है जो लोगों को ऐसा मंच प्रदान करती है जहाँ वह अपने विचार, प्रतिक्रिया, मत, आदि को साझा करते हैं। यह इंटरनेट पर आधारित है जिसका उपयोग दस्तावेज़, वीडियो, फोटोग्राफ्स, विज्ञापन आदि को संप्रेषित करने के लिए किया जाता हैं। आज के इस 21वी सदी को अगर हम मीडिया की सदी कहें, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सोशल मीडिया ने अपने नए- नए आयामों द्वार शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियो का एक विशाल पहाड़ हासिल किया है। आज के दौर में सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग बन गया है। आज मानव जीवन का अस्तित्व इंटरनेट, रेडियो, टेलीविजन, पत्रकार आदि से घिर हुआ है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया(आईएएमएआई) ने अपनी इंटरनेट इन इंडिया रिपोर्ट 2025 में कहा कि सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता(एआईयू) की संख्या में साल दर-साल लगभग 8% की वृद्धि हुई है और यह बढ़ कर मिलियन हो गई है, जिससे भारत दुनिया के सबसे बड़े, सबसे तेजी से विकसित होने वाले डिजिटल बाजारों में से एक बन गया है। सोशल मीडिया में अगर कई नकारात्मक प्रभाव है तो सकारात्मकता भी कई गुना है। सोशल मीडिया के द्वारा हम अपनी बात, राय व सूचना को बहुत ही आसानी से एक - दूसरे के साथ साझा करते हैं। पहले जहाँ कहा जाता था कि पुस्तक ही किसी व्यक्ति का सच्चे मित्र की तरह जीवनभर उसका साथ निभाते है किंतु आज के इस 21 वीं सदी में इन की आवश्यकता अपरिहार्य सी होती हुई प्रतीत हो रही है और इस तकनीक युग की शिक्षा प्रणाली मे तो पुस्तकों की कल्पना असंभव सी लगती है। जहा पुस्तक ही विद्यालय जीवन को मूर्त रूप प्रदान करते थे तो सोशल मीडिया ने हमारी शिक्षा को अमूर्त रूप दी है। सोशल मीडिया ने हमारी शिक्षा जगत को भी बहुत अधिक प्रभावित किया है। शिक्षा जगत में तो सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण भाग बन चुका है जहाँ पहले व्याख्यान विधि से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान किया जाता था पर आज घर बैठे हम सोशल मीडिया नेटवर्किंग के माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा एक बहुआयामी प्रक्रिया है इससे इनकार नहीं किया जा सकता है और सोशल मीडिया के कारण यह बहुआयामी प्रक्रिया और तीव्र गति से बढ़ गई है। इस मीडिया दौर ने शिक्षा की परिभाषा ही बदल कर रख दी है शिक्षा के परंपरागत रूप को बदलकर अपरंपरागत रूप में परिवर्तित कर दी है सोशल मीडिया युवाओं के

शैक्षिक उपलब्धि एवं जीवन शैली दोनों को प्रभावित करती है। यह विद्यार्थियों की सही अध्ययन शैली, शैक्षिक उपलब्धि को भी निर्धारित करती है। सोशल मीडिया केवल शिक्षा तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह युवाओं के दिनचर्या को भी प्रभावित कर रही है। सोशल मीडिया का युवाओं के जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ओर से प्रभाव पड़ता है। एएसईआर(ASER) 2024 की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय युवा सोशल मीडिया के लिए स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं, जबकि केवल 57% शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इन का उपयोग करते हैं। 82%से अधिक युवा स्मार्टफोन चलाते हैं और शिक्षा के लिए इसका उपयोग लिंग के आधार पर लगभग समान ही है। (लड़के 78.8% और लड़कियां 73.4% सोशल मीडिया का उपयोग करती है)

२. सोशल मीडिया

शिक्षा में सोशल मीडिया का तात्पर्य विद्यार्थियों की शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए एक प्लेटफार्म है। सोशल मीडिया सेवा के रूप में एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा एक समान रूचियों ,गतिविधियों, वास्तविक जीवन के संपर्क वाले लोगों के बीच सामाजिक संबंध, या यह कहें ,कि सामाजिक नेटवर्क संबंध स्थापित करते हैं। सोशल मीडिया सेवाओं के कुछ मुख्य प्रकार हैं। जैसे-फेसबुक, व्हाट्सएप, गूगल,टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, यूट्यूब,आदि। सोशल मीडिया में इंटरनेट का प्रयोग करके उपयोगकर्ता अपना दोस्तों व परिवारों से जुड़े रहते है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम दूर बैठे अपने दोस्तों से, परिवार वालों बात से कर सकते हैं।

३. शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से आशय छात्रों द्वारा विद्यालय मे अध्ययन किए जाने वाले विभिन्न विषयों से संबंधित आयोजित परीक्षा से प्राप्त प्राप्तांको से है जिसमें उन्होंने शिक्षा प्राप्त की है। किसी भी व्यक्ति के प्रदर्शन में प्राप्त की गई निपुणता या दक्षता को भी उपलब्धि कहा जा सकता है। किसी विशिष्ट कौशल या ज्ञान को भी उपलब्धि कहा जाता है। स्टैग्नर (1962)ने "उपलब्धि का शैक्षणिक विषयों में छात्रों द्वारा प्राप्त प्रवीणता या उन्नति के स्तर के रूप में प्रभावित किया है।

४. युवा

युवावस्था शब्द को विभिन्न अर्थों में माना और प्रयोग किया जाता है, आमतौर पर इसकी कोई सटीक परिभाषा नहीं होती है और यह बहुत कुछ व्यक्ति की सामाजिक परस्थितियों पर निर्भर करता है न कि पृथ्वी पर बिताए गए कुल समय को दर्शाने वाले संख्यात्मक आंकड़े पर। राष्ट्रीय युवा नीति के अनुसार, युवाओं को 15 से 29 वर्ष की आयु वर्ग के व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया गया है। आज यह राष्ट्रीय जनसंख्या लगभग 28% है। 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 57,करोड युवा 10 से 35 वर्ष की आयु वर्ग में आते हैं।

५. उद्देश्य

युवाओं के अधिगम और शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव का विश्लेषण।
सोशल मीडिया का युवाओं के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव ।

६. सोशल मीडिया का शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित साहित्य का अध्ययन

सैफ. एण्ड एट ऑल (2024) अध्ययन में पाया गया कि सोशल मीडिया का प्रभाव सर्वत्र नकारात्मक नही है। डिजिटल साक्षरता, आत्म-नियमन और समय प्रबंधन को बढ़ावा देकर, शिक्षा संस्थान छात्रों को सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग करने में मदद कर सकते हैं, जिससे उनके सीखने के अनुभव बेहतर होंगे। अंततः, सोशल मीडिया का उपयोग करने का तरीका ही शिक्षा पर इसके प्रभाव को निर्धारित करता है, और सार्थक सहभागिता को प्रोत्साहित कर छात्रों के उनके शैक्षणिक उपलब्धियों को अधिकतम करने में सहायक है ।

नी गाओ एट ऑल (2023) अपने निष्कर्ष मे बताते है कि सीखने के उद्देश्य के लिए सोशल मीडिया का उपयोग विकलांग कॉलेज छात्रों के करियर और सामाजिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हालांकि, गैर-शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए बिताए गए समय का कोई सकारात्मक लाभ नहीं दिखा। कार्तिक यू. (2023) ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि छात्र-शिक्षकों की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च है, सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति उनका दृष्टिकोण अनुकूल तथा सोशल मीडिया उपयोग औसत है विद्यार्थी-शिक्षकों की शैक्षणिक उपलब्धि और सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति उनका दृष्टिकोण महत्वपूर्ण और सकारात्मक रूप से सहसंबंधित है।

जूलियट. ओ एण्ड एट ऑल (2020) –अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र दोस्त बनाने और दोस्त से चैट करने, तस्वीरों और वीडियो को अपलोड करने असाइनमेंट एवं अन्य शैक्षणिक कार्यों के लिए अपने सहपाठियों से संपर्क करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। प्रतिदिन दो से चार घंटा वो सोशल मीडिया पर बिताते हैं एंव सोशल मीडिया छात्रों की उपलब्धि को प्रभावित करता है।

डॉ. भट्ट एम. एस. और डॉ मिर एस.ए. (2020) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष मे पाया कि कश्मीर केंद्रीय विश्वविद्यालय के 33.4% स्नातकोत्तर छात्र सप्ताह में 16-20 घंटे सोशल मीडिया पर सक्रिय पाए गए। इस तरह वे अपने पढ़ाई का काफी समय सोशल मीडिया पर बर्बाद कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर अत्यधिक व्यस्तता ने उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को कमजोर कर दिया है इसलिए सोशल मीडिया को एक सहायक सेवक ही नही, बल्कि एक हानिकारक स्वामी माना जा सकता है। अतः यह अनुशंसा की जाती है कि विश्वविद्यालय परिसर के अंदर मोबाइल फोन के उपयोग पर सख्ती से प्रतिबंध लगाया जाए और उच्च शिक्षण संस्थानों को ई-अधिगम केंद्र स्थापित किए जाने की आवश्यकता है जहाँ छात्रों के शैक्षणिक असाइनमेंट अपलोड किए जा सकें, ताकि छात्र शैक्षणिक गतिविधियों के लिए सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत करें।

देवकी टी.सी (2020) अपने शोध अध्ययन में पाया कि विश्वविद्यालय के छात्र सोशल मीडिया का उपयोग औसत से अधिक करते है। हालांकि विश्वविद्यालय के पूर्व के छात्रों में भी सोशल मीडिया का उपयोग की संख्या औसत से अधिक है। सोशल मीडिया इनके जीवन का एक अभिन्न अंग है और ये उपयोगकर्ता अपने आभासी दुनिया में आभासी सामाजिक संबंध में कुशल होते है। इस तकनीक युग में विद्यार्थियों कि शैक्षिक, मनो सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने और उनकी समस्या का समाधान करने का एक साधन सोशल मीडिया भी है।

मार्कर एण्ड एट ऑल(2017) -इस शोध पत्र में के निष्कर्ष मे बताते है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स (एसएनएस) का उपयोग शैक्षणिक उपलब्धि से सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ है, बशर्ते कि एसएनएस का उपयोग स्कूल से संबंधित हो। लेकिन, स्कूल से असंबंधित एसएनएस का उपयोग खराब शैक्षणिक उपलब्धि से जुड़ा हुआ पाया गया है।

अबू . एण्ड एट ऑल(2016) ने अपने शोध पत्र के निष्कर्ष में पाया कि उच्च शिक्षा में डिजिटल शिक्षा (सोशल मीडिया) का उपयोग छात्रों व नीति-निर्माताओं दोनों को ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षा के उपयोग के लिए सोशल मीडिया का उपयोग महत्वपूर्ण हैं लेकिन शिक्षण और अधिगम पर इसका वास्तविक उपयोग न्यूनतम है। संकाय सदस्य सोशल मीडिया जैसे- ब्लॉक, विक्की पीडिया से अनभिज्ञ हैं और वे अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए फेसबुक, व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। यदि सोशल मीडिया के बाधा को दूर कर उपयोग किया जाए तो शिक्षा में यह एक प्रभावकारी उपकरण साबित हो सकता है विशेष रूप से विकासशील देशों में इसे विकसित और विकासशील देशों के बीच डिजिटल संबंध के लिए एक उपयुक्त मंच के रूप में माना जा सकता है।

नेटो रोके.ऑल (2015) ने अध्ययन किया कि , हाई स्कूल के छात्रों में शैक्षणिक उपलब्धि, अकेलेपन और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच संबंध क्या है और निष्कर्ष प्राप्त किया कि छात्राओ में छात्रो के अपेक्षा अकेले पन का स्तर उच्च पाया गया है। सोशल मीडिया का उपयोग भी छात्राओ द्वारा अधिक किया गया है। साथ भी यह भी पाया गया कि अकेले पन का स्तर जितना अधिक होगा उनकी शैक्षिक उपलब्धि उतना अधिक होगा।

७. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में विश्लेषणात्मक व व्याख्यात्मक विधि का उपयोग किया गया है।

८. डेटा संकलन

प्रस्तुत शोध पत्र में डेटा का संकलन करने के लिए द्वितीयक स्त्रोत डेटा संकलन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में सहकर्मी समीक्षा विधि का प्रयोग करके डेटा का संकलन किया गया है। इसके लिए कई सारे जर्नल्स रिसर्च पेपर(शोधगंगा, रिसर्च स्कॉलर,रिसर्चगेट, एरिक) आदि का उपयोग किया गया है। डिजिटल रिपोर्ट 2025 द स्टेट ऑफ सोशल मीडिया इन 2025 के रिपोर्ट में पाया गया ,कि लोग सोशल मीडिया का उपयोग किस कारण से करते है। जिनका विवरण निम्न लिखित है जो ग्राफ के माध्यम से दिखाया गया है।

- दोस्तों और परिवार से जुड़े रहने के लिए -50.05%
- खाली समय बिताने के लिए -39.00%
- खबरें पढ़ने के लिए -34.50%
- सामग्री ढूंढना के लिए (जैसे: लेख, वीडियो)-30.50
- यह देखना कि किस बारे में बात हो रही है-29.20%
- खरीदने के वस्तु ढूंढना के लिए- 27.30%
- कुछ करने और खरीदने के लिए ढूंढना-27.20%

- खेल देखना या उन्हें अनुसरण करने के लिए-23.60%
- सीधा प्रसारण देखने के लिए-23.40%
- अपने पसंदीदा कंपनियों की सामग्री देखने के लिए-22.50%
- नए संपर्क बनाने के लिए -22.10%
- काम से जुड़ी संपर्क बनाने या रिसर्च के लिए -22.10%
- दूसरों के साथ राय बांटना और उन पर चर्चा करना के लिए-21.90%
- प्रसिद्ध व्यक्ति या प्रभावशाली व्यक्ति का अनुसरण करने के लिए-19.70%
- चीज़ों से पीछे न छूटने की कोशिश करना के लिए (FOMO)-19.50%

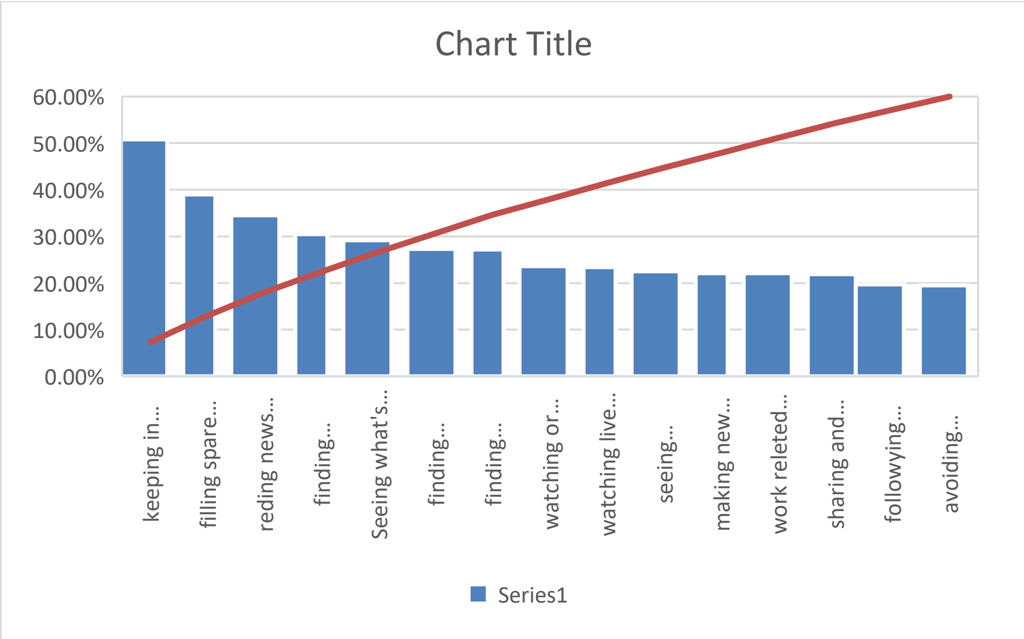

Digital 2025: the state of social media in 2025

९. प्रासंगिकता

शिक्षा एक गतिशील लगातार चलने वाली प्रक्रिया है क्रो एंड क्रू के अनुसार "शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। इस बात से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारे जन्म से लेकर जब तक हमारी मृत्यु नहीं हो जाती तब तक हम जीवन भर कुछ न कुछ सीखते रहते हैं और यह सीखना ही ज्ञान है, शिक्षा है और इस 21वीं सदी में जिसे हम तकनीकी युग भी कहते हैं, हमारे ज्ञान अर्जन कि प्रकिया को और भी सरल कर दिया है। शिक्षा एक जरूरत नहीं हमारे जीवन जीने का एक आधार है।

१०. निष्कर्ष

सोशल मीडिया और शैक्षिक उपलब्धि के बीच गहरा संबंध है। प्रस्तुत शोध पत्र के लिए हम ने संबंधित शोध साहित्य व शोध पत्रो का उपयोग किया है और यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और सोशल मीडिया का उपयोग शिक्षा के लिए मददगार है। जैसे- सैफ उल्लाह एण्ड एट ऑल   (2024)अध्ययन में पाया गया कि सोशल मीडिया का प्रभाव सर्वत्र नकारात्मक नही है अगर वह अपनी डिजिटल साक्षरता और नियमन व समय का प्रबंधन करें। शिक्षा संस्थानों में सोशल मीडिया का प्रभावी तरीके से उपयोग किया जाना चाहिए। सोशल मीडिया हमारी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण भाग बन चुका है जिससे न तो नकारा जा सकता है और नहीं बचा जा सकता है। हमारी शिक्षा, नीति व भारत सरकार सोशल नेटवर्किंग साइटों का हमारे विश्वविद्यालय, शिक्षा संस्थानों में भी उपयोग करने के पक्ष में है। कैरोलिन मार्कर (2017) अपने शोध पत्र के निष्कर्ष मे बताया कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स (एसएनएस) का उपयोग शैक्षणिक उपलब्धि से सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ है, बशर्ते कि एसएनएस का उपयोग स्कूल से संबंधित हो। इस तरह कई सारे शोध पत्रों को पढ़ने के पर या निष्कर्ष निकाला गया है। कि अगर सोशल मीडिया के उपयोग का प्रभाव छात्रों से परिचित करा के (सोशल मीडिया के उपयोग का लाभ और हानि) किया जाए तो वह उनके शैक्षिक उपलब्धि उन्नयन में हितकारी होगा।

एएसईआर 2024 की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय युवा सोशल मीडिया के लिए स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं, जबकि केवल 57% शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इन का उपयोग करते हैं। 82%से अधिक युवा स्मार्टफोन चलाना जानते हैं और शिक्षा के लिए इसका उपयोग लिंग के आधार पर लगभग समान ही है। (लड़के 78.8% और लड़कियां 73.4% सोशल मीडिया का उपयोग करती है)

संदर्भ सूची

1. Bhatt, M. S., & Mir, S. A. (2020). Social media usage and academic achievement among post-graduate students: A case study of Central University of Kashmir. Ilkogretim Online, 19(2), 696-829. https://doi.org/10.17051/ilkonline.2020.02.696829
2. Caratiquit, K. P., & Caratiquit, L. V. (2023). Influence of social media addiction on academic achievement in distance learning: Intervening role of academic procrastination. Turkish Online Journal of Distance Education (TOJDE), 24(1). ISSN: 1302-6488.
3. DataReportal. (2025). Digital 2025: Global digital insights. https://datareportal.com
4. Devaki, T. C. (2020). Effect of social media usage on mental health and academic achievement of pre university students [Doctoral dissertation, University of Mysore]. Shodhganga. http://hdl.handle.net/10603/351083
5. Gao, N., Eissenstat, S. J., & Tammy, L. (2023). Social media use and academic, social, and career development among college students with disabilities. Journal of American College Health. http://dx.doi.org/10.1080/07448481.2021.1947831
6. Karthik, U. (2023). Academic achievement of student teachers in relation to their attitude towards using social media and social media addiction [Doctoral dissertation]. Shodhganga. http://hdl.handle.net/10603/534902
7. Marker, C., Gnambs, T., & Appel, M. (2017). Active on Facebook and failing at school? Meta-analytic findings on the relationship between online social networking activities and academic achievement. Educational Psychology Review, 30, 651–677. https://doi.org/10.1007/s10648-017-9430-6
8. Neto, R., Golz, N., & Polega, M. (2015). Social media use, loneliness, and academic achievement: A correlational study with urban high school students. Eastern Education Research Association. http://www.eeraorganization.org
9. Oguguo, B. C. E., et al. (2020). Influence of social media on students’ academic achievement. International Journal of Evaluation and Research in Education (IJERE), 9(4), 1000-1009.
10. Sakhieva, R. G., Meshkova, I. N., Gimaliev, V. G., Melnik, M. V., Shindryaeva, N. N., & Zhdanov, S. P. (2024). Exploring the relationship between social media use and academic performance. Online Journal of Communication and Media Technologies, 14(1), e202408. https://doi.org/10.30935/ojcmt/14133
11. Sobaih, A. E. E., Moustafa, M. A., Ghandforoush, P., & Khan, M. (2016). To use or not to use? Social media in higher education in developing countries. Computers in Human Behavior, 58, 296-305. https://doi.org/10.1016/j.chb.2016.01.002
12. Ullah, S. M. I., & Yousuf, M. I. (2024). Effects of social media use on students' academic achievement at university level: The critical review of social sciences studies. Critical Review of Social Sciences Studies, 2(2), 1605-1618.
13. https://asercentre.org/
14. https://www.businesstoday.in/
15. https://egyankosh.ac.in
16. https://eric.ed.gov
17. https://www.researchgate.net
18. https://hdl.handle.net/10603/219408